

चिदानन्द चैतन्यमय, शुद्धातम को जान ।
 निज स्वरूप में लीन हो, पाओ केवलज्ञान ॥
 नव केवल लब्धि प्रकटाओ,
 फिर योगों को नष्ट कराओ ।
 अविनाशी सिद्ध पद को पाओ,
 आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥३॥

(६)

धन्य-धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है ।
 सिद्धों का दरबार है ये सिद्धों का दरबार है ॥टेक॥
 खुशियाँ अपार आज हर दिल में छाई हैं ।
 दर्शन के हेतु देखो जनता अकुलाई है ।
 चारों ओर देख लो भीड़ बेशुमार है ॥१॥
 भक्ति से नृत्य-गान कोई है कर रहे ।
 आतम सुबोध कर पापों से डर रहे ॥
 पल-पल पुण्य का भरे भण्डार है ॥२॥
 जय-जय के नाद से गूँजा आकाश है ।
 छूटेंगे पाप सब निश्चय यह आज है ॥
 देख लो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्ति द्वार है ॥३॥

(७)

वीर प्रभु के ये बोल, तेरा प्रभु! तुझ ही में डोले ।
 तुझ ही में डोले, हाँ तुझ ही में डोले ।
 मन की तू घुंडी को खोल, खोल-खोल-खोल ।
 तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥टेक॥
 क्यों जाता गिरनार, क्यों जाता काशी,
 घट ही में है तेरे, घट-घट का वासी ।
 अन्तर का कोना टटोल, टोल-टोल-टोल ॥१॥

चारों कषायों को तूने है पाला,
 आतम प्रभु को जो करती है काला ।
 इनकी तो संगति को छोड़, छोड़-छोड़-छोड़ ॥२॥
 पर मैं जो ढूँढा न भगवान पाया,
 संसार को ही है तूने बढ़ाया ।
 देखो निजातम की ओर, ओर-ओर-ओर ॥३॥
 मस्तों की दुनिया में तू मस्त हो जा,
 आतम के रंग में ऐसा तू रँग जा ।
 आतम को आतम में घोल-घोल-घोल ॥४॥
 भगवान बनने की ताकत है तुझमें,
 तू मान बैठा पुजारी हूँ बस मैं ।
 ऐसी तू मान्यता को छोड़, छोड़-छोड़-छोड़ ॥५॥

शास्त्रभक्ति

(१)

हे जिनवाणी माता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ।
 शिवसुखदानी माता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम । टेक ॥
 तू वस्तु-स्वरूप बतावे, अरु सकल विरोध मिटावे ।
 हे स्याद्वाद विख्याता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥१॥
 तू करे ज्ञान का मण्डन, मिथ्यात कुमारग खण्डन ।
 हे तीन जगत की माता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥२॥
 तू लोकालोक प्रकाशे, चर-अचर पदार्थ विकाशे ।
 हे विश्वतत्त्व की ज्ञाता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥३॥
 शुद्धातम तत्त्व दिखावे, रत्नत्रय पथ प्रकटावे ।
 निज आनन्द अमृतदाता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥४॥
 हे मात! कृपा अब कीजे, परभाव सकल हर लीजे ।
 'शिवराम' सदा गुण गाता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥५॥